बत्तख जो पकाए जाने से बाल-बाल बची

लेखन व चित्रः मार्क सिमॉन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बत्तख जो पकाए जाने से बाल-बाल बची

लेखन व चित्रः मार्क सिमॉन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बत्तख जो पकाए जाने से बाल-बाल बची

लेखन व चित्रः मार्क सिमॉन्ट

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जेन, मेरी मार्गरेट, व सारा के लिए

जब एमिली बत्तख नहीं, चूज़ा ही थी,
उसे अपनी माँ के पीछे कतार में तैरने के बदले, कतार तोड़ गोल चक्करों में तैरना बहुत भाता था।

बड़ी हो बत्तख बनने पर भी एमिली कतार तोड़ा करती थी। पर अब वह हवा में उड़ते हुई पलटी खाने और तब हवा में गोता लगाने के बाद अचानक ऊपर उड़ना पसन्द करती थी।

''तुम यह सब करते-करते थक जाओगी,'' उसका दोस्त सैम कहता।

पर एमली उसकी बात अनसुनी कर देती,
क्योंकि उसे हमेशा अपने मन
की करना पसन्द था।
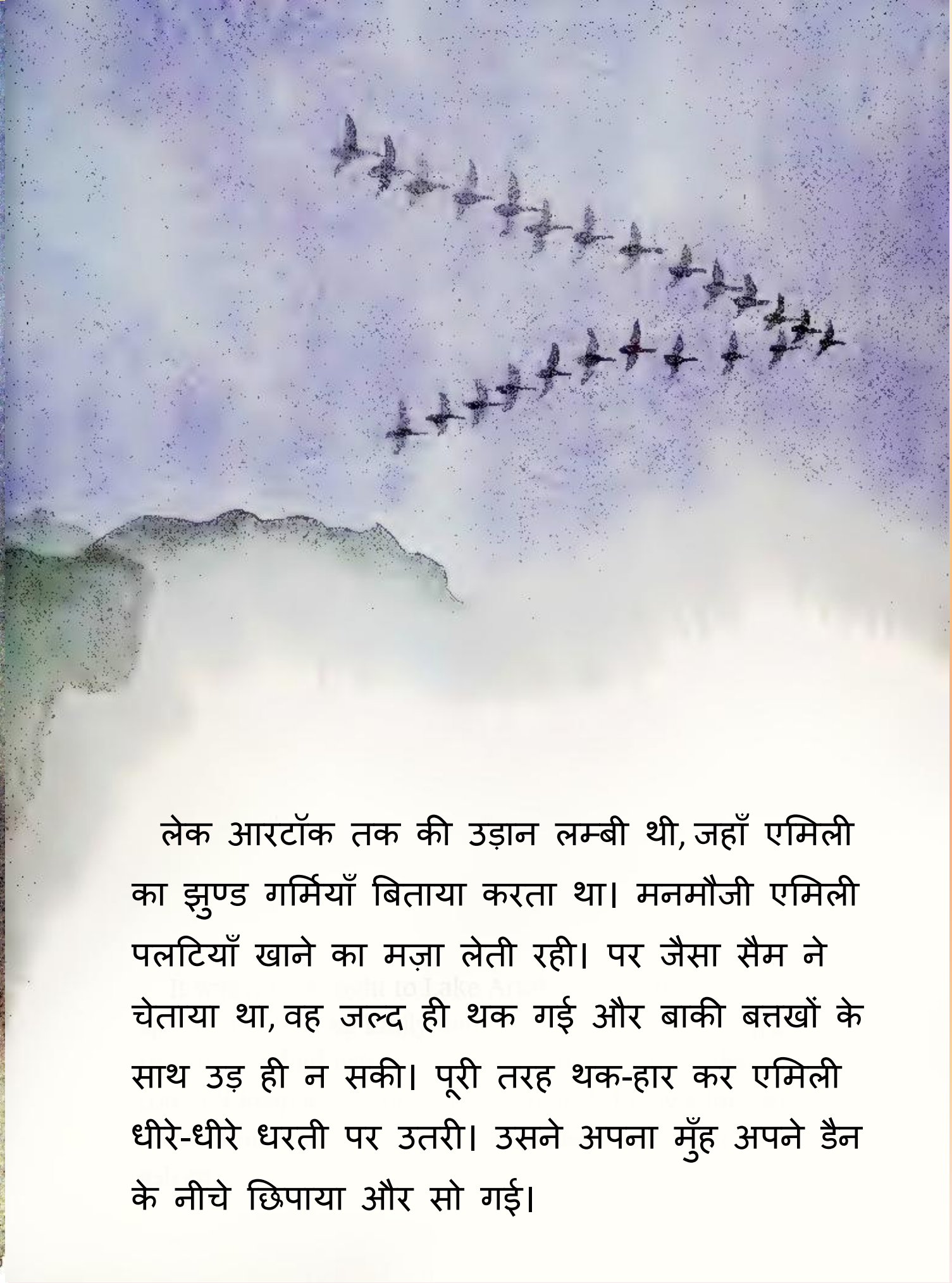
लेक आरटॉक तक की उड़ान लम्बी थी, जहाँ एमिली का झुण्ड गर्मियाँ बिताया करता था। मनमौजी एमिली पलटियाँ खाने का मज़ा लेती रही। पर जैसा सैम ने चेताया था, वह जल्द ही थक गई और बाकी बत्तखों के साथ उड़ ही न सकी। पूरी तरह थक-हार कर एमिली धीरे-धीरे धरती पर उतरी। उसने अपना मुँह अपने डैन के नीचे छिपाया और सो गई।

अगली सुबह जब एमिली जागी, उसने अपने गिर्द सात बड़ी सफेद बत्तखों को देखा। वह उनसे दुआ-सलाम करती उसके पहले ही वे मुड़ीं और डोलती-डगमगाती उस ओर चल दीं, जहाँ एक किसान उनका नाश्ता परोस रहा था। एमिली भी उनके पीछे-पीछे चल दी। उसने भी मक्की, गेहूँ, और अजमोद की डन्ठलों का भरपेट स्वादिष्ट नाश्ता किया।

जब सूरज ढ़ला किसान अपनी बत्तखों को लोमड़ियों और रैकूनों से बचाने एक छोटे दड़बे में ले गया। जब उसने एमिली को देखा, उसके चेहरे पर एक चौड़ी मुस्कान खिल गई।

एमिली को लगने लगा ज़िन्दगी इससे बेहतर तो हो ही नहीं सकती।

"सोचती हूँ मैं यहीं रह जाऊँ," उसने फैसला कर लिया।

समय गुज़रा एमली खेत में एक आरामदेह ज़िन्दगी बसर करती रही। सब कुछ बिलकुल सही चल रहा था, जब तक कि . . .
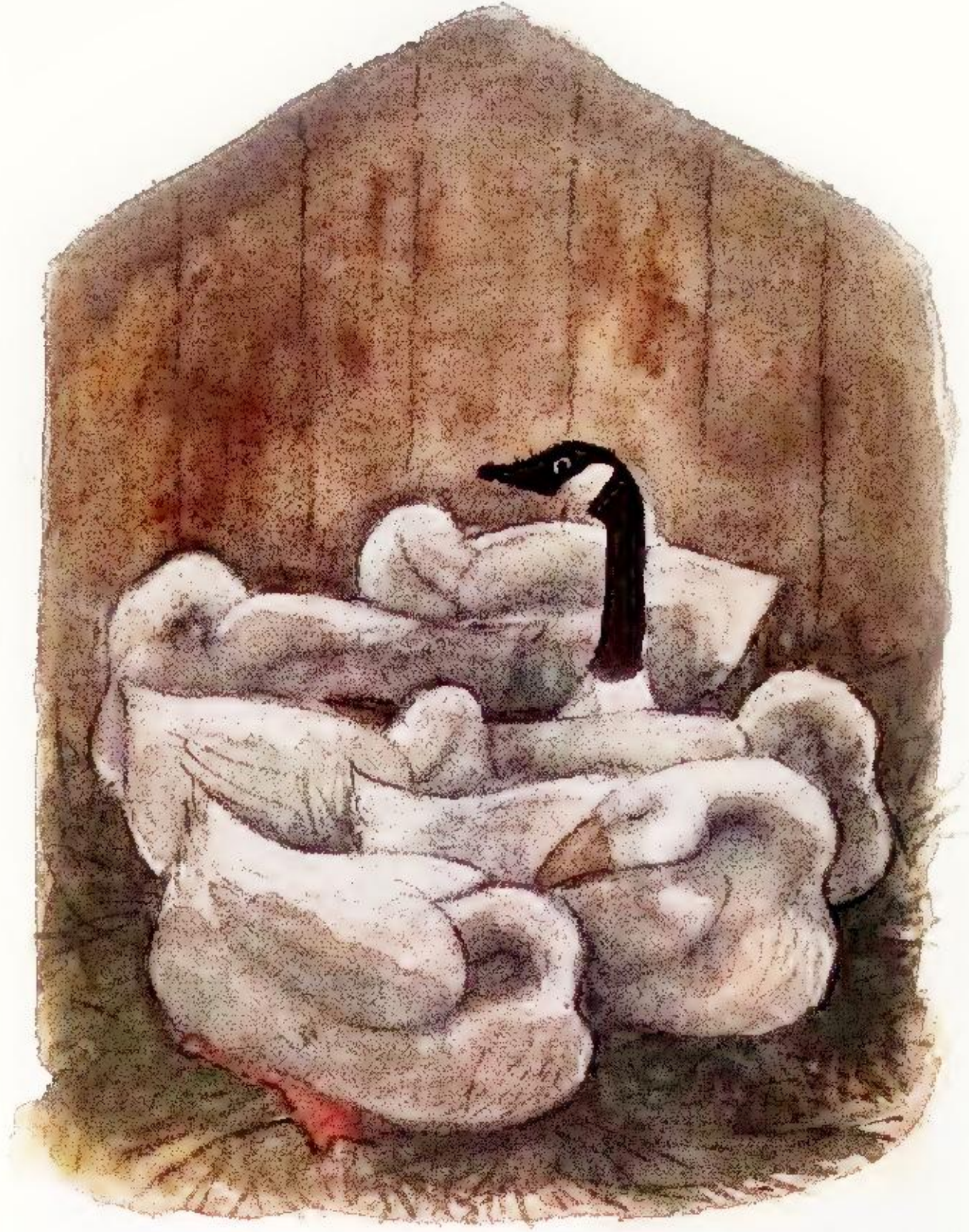
..एक सुबह एमिली को लगा कि कुछ तो गड़बड़ है। उसने उपने संगी-साथियों को देखा जो आराम से सो रही थीं। पहले सात सफेद बत्तखें थीं, पर अब एमिली को सिर्फ छह ही नज़र आईं।

एमिली ने जल्दी-जल्दी अपना नाश्ता निगला, ताकि वह गायब बत्तख की खोज कर सके। वह पूरे दिन उसे तलाशती रही।

वह थक कर हार मानने ही वाली थी, कि उसकी नज़र एक बाल्टी पर पड़ी। उसमें सफेद पर थे। एमिली का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा।

“अरे, रे!” वह चीखी

अब उसे समझ आया कि किसान हर दिन इतना शानदार नाश्ता भला क्यों खिलाया करता था। उन्हें लोमड़ियों और रैकूनों से बचाता भला क्यों था। वह उन्हें खुद खा जाना चाहता था।

“मुझे यहाँ से निकल भागना है,” एमिली ने सोचा और जितनी तेज़ हो सकता था दौड़ी और उड़ने के लिए अपने डैन पसारे और फड़फड़ाए। पर कुछ तो झमेला था। वह उड़ ही नहीं पाई।
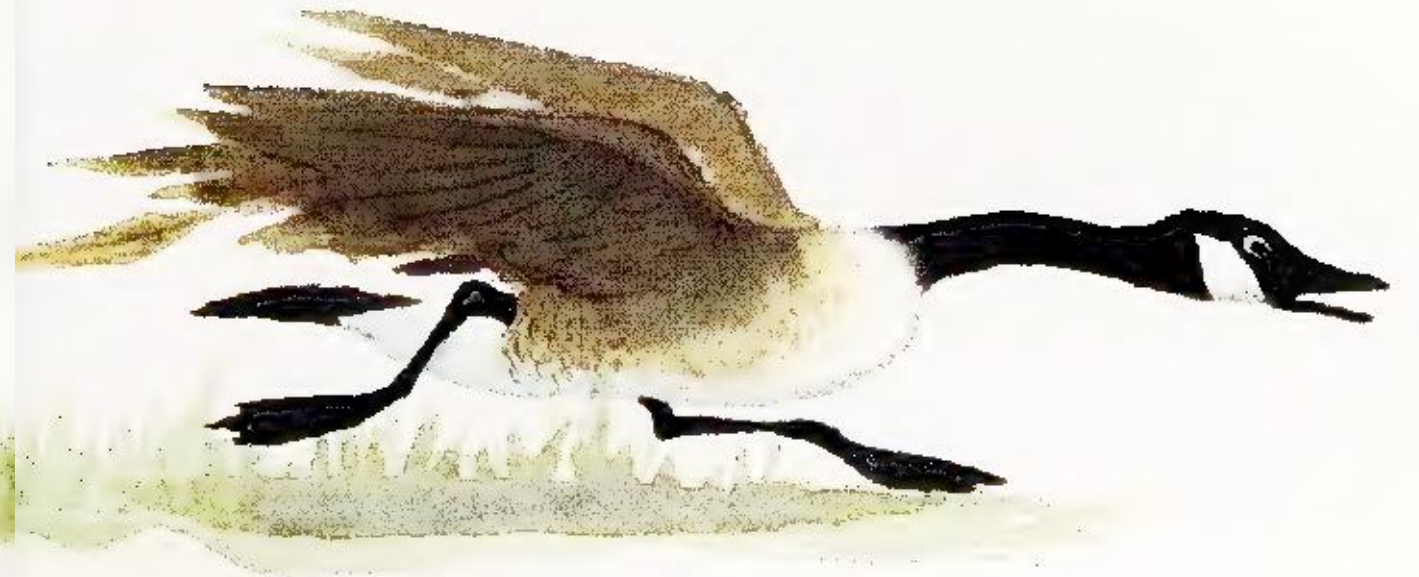
दरअसल एमिली यह भूल ही गई कि यह वह मौसम था जब उसकी तरह की कनाडा बत्तखें अपने उड़ने वाले पर खो देते हैं। एमिली इसलिए उड़ान नहीं भर सकी क्योंकि उसके उड़ने वाले पर झड़ चुके थे। वह फिर से उड़ सके इसके पहले उसे नए पर उगने का इन्तज़ार करना था।

एमिली अकेला और असहाय महसूस कर रही थी। फार्म पर आने के बाद उसे पहली बार सैम और अपने बाकी झुंड की याद आई। क्या वो उनको कभी दुबारा देखेगी?

एमिली की जान खतरे में थी। अपने उड़ने वाले परों के उगने का इन्तज़ार करते हुए एमिली किसान और उसकी बीवी पर भी नज़र रखने लगी। एक सप्ताह गुज़रा, तब दूसरा भी।

तब एक अभागे दिन किसान की बीवी ने कहा, "चलो आज रात अपन कनाडा बत्तख खाते हैं।"

किसान की बीवी उस छोटे दड़बे के पास गई। उसने एक-एक कर बत्तखों को निकाल डाला। अब अन्दर सिर्फ एमिली थी।

"आ जाओ, नन्ही बत्तख," उसने फुसलाते हुए कहा।

एमिली को लगा कि वह फंस गई है।

हताशा से घिरी एमिली ने अपने पंख ज़ोर से फड़फड़ाए और आगे को उछली। किसान की बीवी अचनाक हुए इस हमले से डगमगाई और लुढ़क गई। एमिली को मौका मिल गया। वह दौड़ी और खुले दरवाज़े से बाहर निकल उड़ चली।
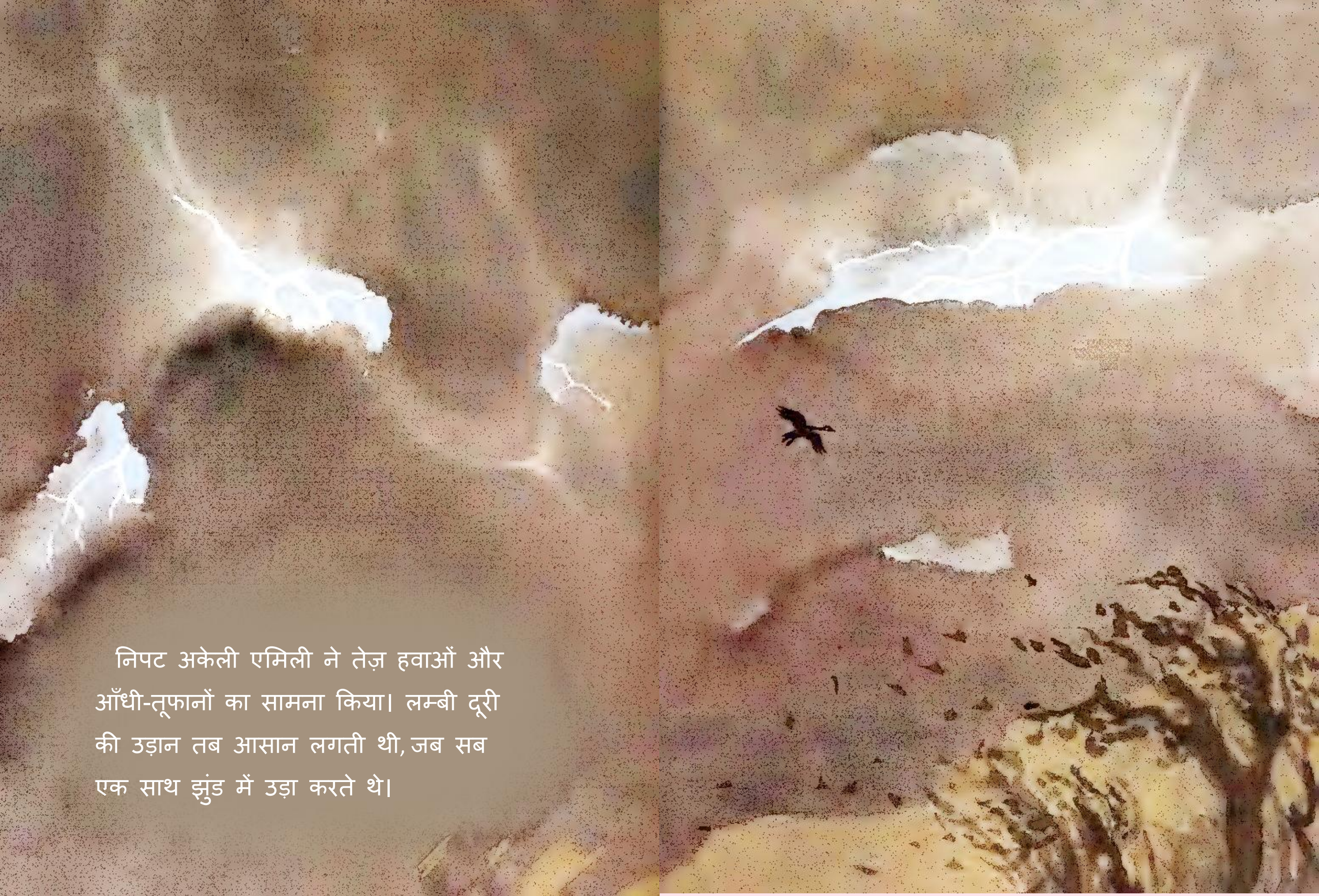
उड़ी?
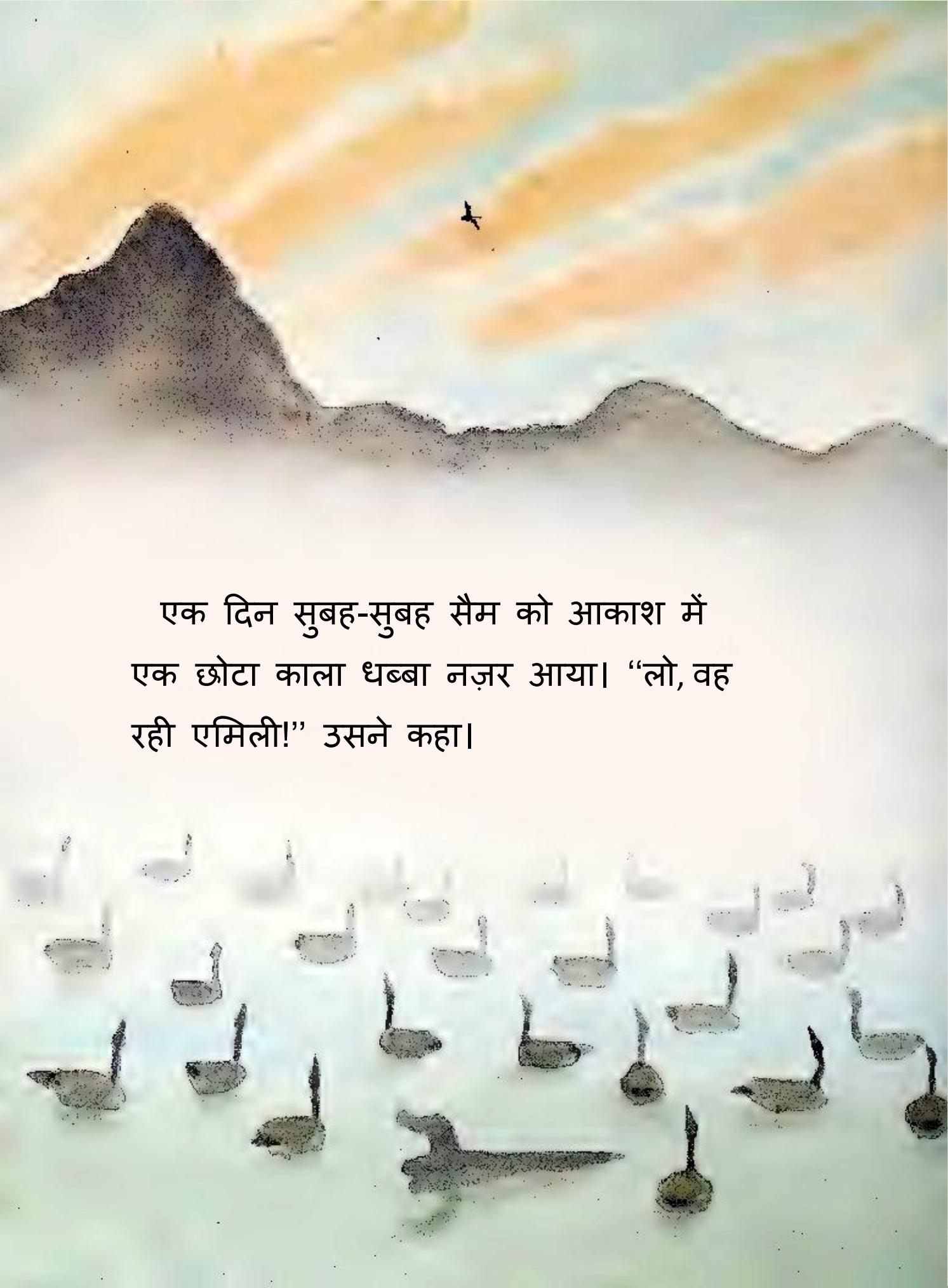
हाँ, एमिली के पर उग आए थे। खुशी से काँ-काँ करते वह आकाश में ऊपर उठी और लेक आरटॉक की दिशा में तेज़ी से बढ़ी।

निपट अकेली एमिली ने तेज़ हवाओं और आँधी-तूफानों का सामना किया। लम्बी दूरी की उड़ान तब आसान लगती थी, जब सब एक साथ झुंड में उड़ा करते थे।

एक दिन सुबह-सुबह सैम को आकाश में एक छोटा काला धब्बा नज़र आया। ''लो, वह रही एमिली!'' उसने कहा।
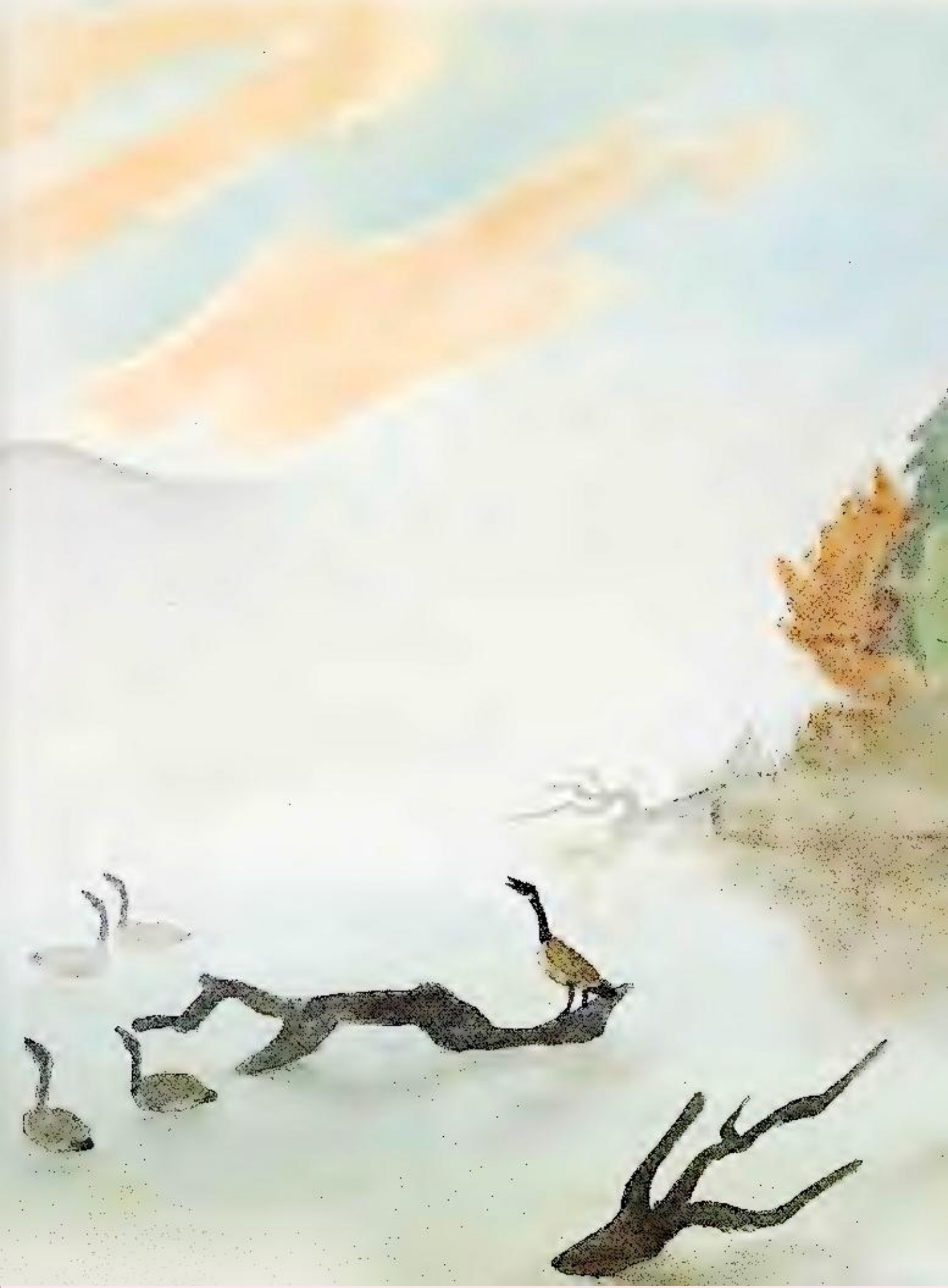
सैम उससे मिलने ऊपर उड़ा और वे दोनों आहिस्ता-आहिस्ता ताल में उतरे।
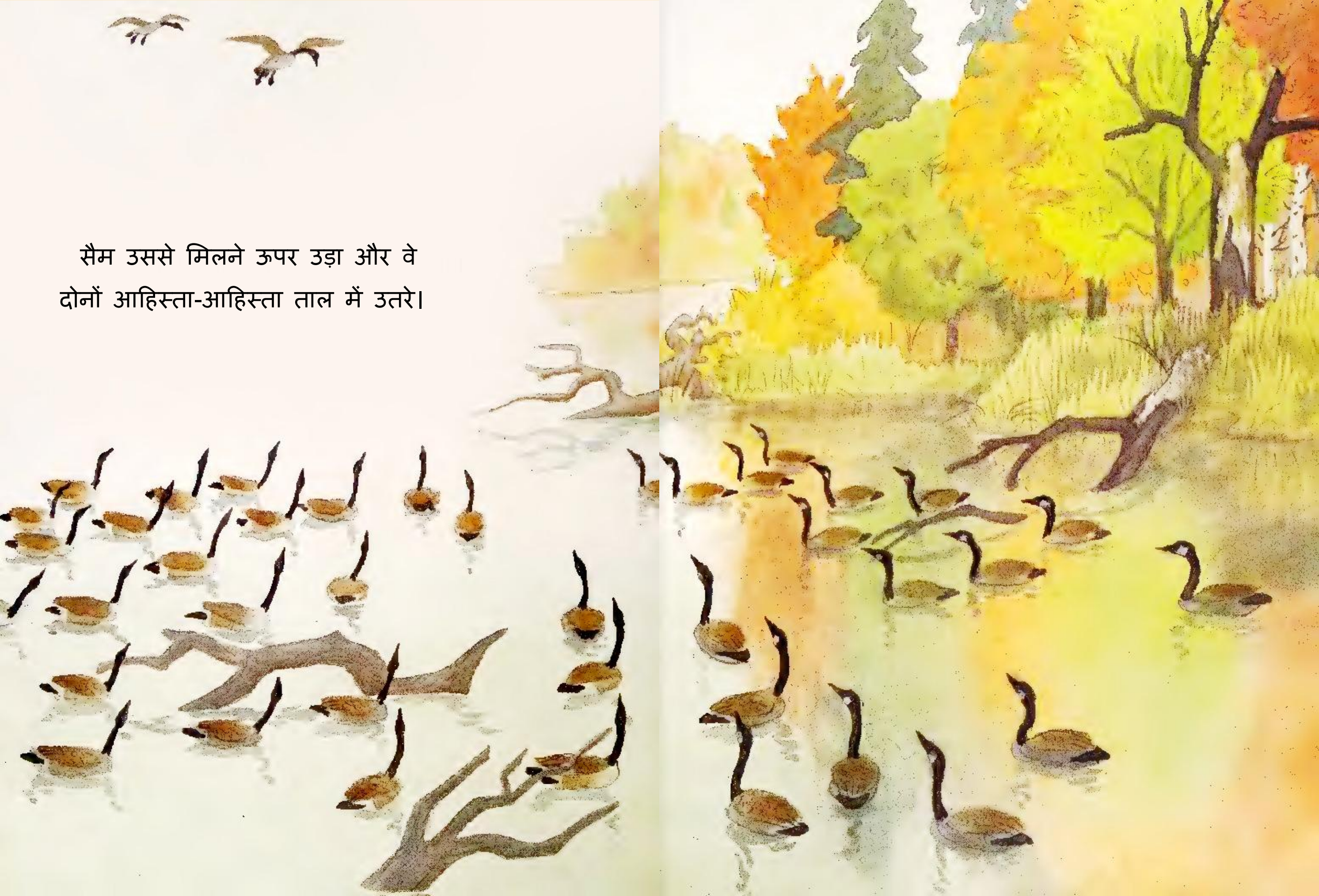
अपने दोस्तों के साथ होना कितना सुखद था।

.... पर जब झुंड की बत्तखें शाम को सोने की तैयारी करतीं, एमिली को सैम के साथ आकाश पल्टियाँ खाना और गोते लगा चक्कर खाना अब भी अच्छा लगता है - बस मज़ा उठाने के लिए।